~~Paper I (G+A)~~

B.A. II Hons Paper-III History — सन ७८० से ८१० तक

(1) Short notes

धर्मपाल

Ans → गोपाल की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र धर्मपाल ७७० में सिंहासन पर बैठा जिसने पाल वंश की ख्याति को दूरस्थ देशों तक फैलाया। विरासत में उसे एक सुसंगठित राज्य मिला था अतः उसने उसका विस्तार करने का प्रयास किया। उसने अनेक युद्ध किए और उनमें विजय प्राप्त करके संपूर्ण उत्तर भारत में अपना सिक्का जमाया।

वत्सराज से युद्ध → सन ७८३ ई० के लगभग गुर्जर प्रतिहार नरेश वत्सराज ने कन्नौज पर आक्रमण करके वहाँ के राजा इन्द्रायुध को पराजित किया। वत्सराज की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर धर्मपाल चिंतित हुआ। दोनों के बीच युद्ध हुआ जिसमें धर्मपाल की पराजय हुई। डा० मजुमदार का मत है कि युद्ध दोआब में हुआ था।

ध्रुव से युद्ध → वत्सराज से पराजित होने के बाद धर्मपाल को गहरा धक्का लगा। परन्तु उसी समय राष्ट्रकूट सम्राट ध्रुव ने उत्तरी भारत पर आक्रमण करके गुर्जर प्रतिहार नरेश वत्सराज को पराजित किया तत्पश्चात ध्रुव और धर्मपाल के मध्य गंगा और यमुना के दोआब में भयंकर युद्ध हुआ। जिसमें धर्मपाल की पराजय हुई। संजन और सूरत के अभिलेखों में उल्लेख मिलता है →

गंगा यमुनयो मध्ये राज्ञो गौडस्य नश्यतः।
लक्ष्मी लीला रविन्दानि श्वेतच्छत्राणि योऽहरत्।
संजय लेख, गांगेय सन्तति निष्ठा विरुद्ध कीर्ति:

डा० मजूमदार के अनुसार यह युद्ध दोआब में हुआ था। परन्तु पृथ्वी राज विजय नामक ग्रंथ से प्रकट होता है कि यह युद्ध बंगाल में हुआ था।

धर्मपाल की विजय → ध्रुवपाल का गंगा और यमुना के दोआब पर अधिकार हो गया, परन्तु वह वहाँ अधिक दिनों तक टिक न सका। वह पुनः दक्षिण की ओर वापस चला गया। इसका लाभ उठाकर धर्मपाल ने अपनी शक्ति को पुनः केंद्रित किया। इसका सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी वत्सराज समाप्त हो चुका था और संपूर्ण उत्तरी भारत में उथल पुथल

Scanned with CamScanner

भगी हुई थी। अतः उसने कन्नौज पर फिर आक्रमण किया और वहाँ के सम्राट इन्द्रायुध को हटाकर के चक्रायुध को सम्राट बनाया। भागलपुर अभिलेख की प्रस्तुत पंक्तियां इस तथ्य की साक्षी हैं।

जित्वेन्द्रराज प्रभृतीन् अरातीन उपार्जिता येन महोदयश्रीः।
दत्ता पुनः सा बलिनार्थयित्रे चक्रायुधायानति वामनाय

अर्थात उसने कन्नौज पर पुनः आक्रमण किया और उसके राजा इन्द्रायुध को सिंहासन से उतार कर उसके स्थान पर चक्रायुध को राजा बनाया।

तत्पश्चात भोज, मत्स्य, कुरु, मद्र, यवन, अवन्ति, गान्धार और कीर राजाओं को उसने चक्रायुध के अभिषेक के अवसर पर कन्नौज में आमंत्रित किया। इस संबंध में डा० मजूमदार का मत है कि यद्यपि इन सभी राज्यों पर धर्मपाल ने विजय नहीं प्राप्त की थी। परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से वे उसके अधीन थे।

डा० मजूमदार का यह मत खलीमपुर अभिलेख और गुजराती कवि सोड्ढल के ग्रंथों पर आधारित है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है डा० मजूमदार ने इस संबंध में भूल की है क्योंकि खलीमपुर अभिलेख ऐतिहासिक दृष्टि से उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना इसका काव्यात्मक महत्व है अतः पूर्ण रूप से सत्य नहीं माना जा सकता। यह भी नहीं कहा जा सकता कि उपरोक्त राज्य धर्मपाल के अधीन थे। सोड्ढल के ग्रंथ में 'उदयन-सुन्दरी कथा' का काव्य की दृष्टि से अधिक महत्व है और ऐतिहासिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व नहीं है।

यह ठीक है कि उपर्युक्त समस्त राज्यों में धर्मपाल का अधिकार नहीं था परन्तु इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं है कि उत्तरी भारत के बहुत बड़े भाग पर धर्मपाल का साम्राज्य स्थापित हो गया था। कन्नौज का संरक्षित राजा उसके अधीन था। कुछ विद्वानों का मत है कि नेपाल को भी धर्मपाल की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी।

परन्तु यह मत भी अधिक उचित नहीं प्रतीत होता।

कुछ प्रमुख इतिहासकार यह भी कहते हैं कि धर्मपाल राष्ट्रकूट राज्य को तहस नहस करता हुआ बम्बई तक पहुँचा था। उनके ये विचार इसलिए हैं कि कहा जाता है कि धर्मपाल की सेना गोकर्ण में ठहरी थी और वे गोकर्ण को बम्बई में स्थित मानते हैं। परन्तु इस संबंध में कोई अभिलेख नहीं प्राप्त होता।

राष्ट्रकूटों से युद्ध → वत्सराज की मृत्यु के पश्चात 805 ई० में उसका पुत्र नागभट्ट गद्दी पर बैठा। 808 ई० में राष्ट्रकूटों का राज्य गोविन्द तृतीय के हाथों में आया। 809 ई० में गोविन्द तृतीय से प्रतिहार सम्राट नागभट्ट की ~~इस~~ पराजय को देखकर बंगाल नरेश ~~अ~~ धर्मपाल और कन्नौज नरेश चक्रायुध ने राष्ट्रकूट राजा गोविन्द तृतीय की अधीनता स्वीकार कर ली। दासता स्वीकार कर ली।

प्रतिहारों से युद्ध → जब प्रतिहारों और पालों को हराकर राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय दक्षिण लौट गया तो नागभट्ट ने अवसर पाकर कन्नौज पर आक्रमण किया। कन्नौज का राजा चक्रायुध उसका मुकाबला नहीं कर सका। चक्रायुध बंगाल के पालों से रक्षित था। अतः पाल नरेश को प्रतिहारों की यह विजय असह्य हुई। फलस्वरूप नागभट्ट और धर्मपाल के मध्य युद्ध हुआ। जिसमें धर्मपाल की पराजय हुई। इस प्रकार धर्मपाल को नागभट्ट के सामने झुकना पड़ा और कन्नौज पर उसका कोई भी अधिकार नहीं रहा।

[illegible]

व्यक्तित्व → धर्मपाल एक विजयी व्यक्तित्व का व्यक्ति था। एक ओर उसे युद्ध से अभिरुचि थी और दूसरी ओर वह महान विद्या प्रेमी और संस्कृति का प्रेमी था। ~~[illegible]~~ वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने भागलपुर के समीप गंगा नदी के किनारे विक्रमशील विहार की स्थापना की। उसने सोमपुर में भी महाविहार ~~को~~ निर्माण ~~के~~ करवाया।

(५)

मृत्यु → धर्मपाल ने ७७० ई० से लगभग ८१० ई० तक राज्य किया और 'परमेश्वर' 'परमभट्टारक' 'महाराजाधिराज' आदि अनेक उपाधियों को धारण करने वाले इस सम्राट की मृत्यु ८१० ई० में हो गया